गुरु गोरखनाथ जी
राजकीय महाविद्यालय हिसार

हिंदी
विभागीय पत्रिका

भाषा बचेगी तो संस्कृति बचेगी ।

राजपाल

सत्र : 2025-26

जनवरी, 2026

हिंदी विभागीय पत्रिका

हिंदी ... साहित्य... प्रौद्योगिकी...

हिंदी समृद्ध परम्परा की अगली कड़ी

वर्ष : 01 अंक 13 जनवरी 2026
पौष | विक्रम संवत-2082

संस्थापक सम्पादक

डॉ राजपाल

सहायक सम्पादक

डॉ. राजेंद्र प्रसाद
डॉ. वीरेंद्र
डॉ. देवेंद्र सिंह सांगा

छात्र सम्पादक

किरण रानोलिया
रिनू
राहुल, प्रियंका
संतोष

सम्पादकीय कार्यालय

हिंदी विभाग, गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय हिसार

9466370922, 9255451522

gchisarhindi@gmail.com
dr.rajhisari@gmail.com

एक नज़र

प्राचार्य संदेश
संपादकीय
गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

परिचय

विनोद कुमार शुक्ल- एक परिचय

साहित्य – मंथन

विविध
साहित्य प्रश्नोत्तरी
शब्द-सम्पदा
विलोम शब्द
प्रशासनिक शब्दावली
विश्व हिंदी दिवस पर विशेष
मासूम
पुस्तक समीक्षा

हिन्दी साहित्य विषय के प्रतियोगियों के लिए भी उपयोगी

संदेश

नव वर्ष के इस शुभ अवसर पर, मैं पूरे महाविद्यालय परिवार—छात्रों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों—को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। यह वर्ष परिवर्तन का प्रतीक है, और हमारे लिए यह समय स्वयं को पुनर्परिभाषित करने, नए लक्ष्य निर्धारित करने तथा सामूहिक प्रगति के पथ पर आगे बढ़ने का है। पिछले वर्ष ने हमें अनेक चुनौतियाँ दीं, पर साथ ही यह भी सिखाया कि संकट की घड़ियाँ हमारी सामूहिक शक्ति को निखारने का अवसर होती हैं। महाविद्यालय का यह परिसर केवल शैक्षणिक गतिविधियों का केंद्र नहीं, बल्कि सामूहिक विकास, आपसी सहयोग और मानवीय मूल्यों के निर्माण का भी क्षेत्र है। हमने देखा कि कैसे छात्रों ने अकादमिक से लेकर सामाजिक गतिविधियों तक में नई ऊर्जा के साथ भाग लिया और नए मानदंड स्थापित किए। नव वर्ष हमें यह याद दिलाता है कि बीते हुए समय से प्राप्त अनुभवों को हमें सीख का आधार बनाना है, न कि भविष्य के सपनों में बाधा। जिस प्रकार प्रकृति में ऋतु-परिवर्तन के साथ नवजीवन का संचार होता है, उसी प्रकार हमें भी अपने विचारों और कार्यशैली में नवीनता लानी होगी। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है—न केवल पाठ्यक्रमों को पूरा करना, बल्कि ऐसे सक्षम, संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक तैयार करना जो समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकें। इस वर्ष हम संकल्प लें कि अपनी ऊर्जा को रचनात्मक दिशा देंगे, नए प्रयोगों से नहीं डरेंगे, और महाविद्यालय के इस समुदाय को एक ऐसा सुरक्षित एवं प्रेरक वातावरण देंगे जहाँ हर व्यक्ति स्वयं को अभिव्यक्त कर सके। हमारी सफलता तभी सार्थक है जब वह सबके विकास में योगदान दे।

मेरी कामना है कि यह नया वर्ष हम सभी के जीवन में नई उपलब्धियाँ, नए अवसर और अपार खुशियाँ लेकर आए। सभी को नव वर्ष की ढेरों बधाई एवं शुभकामनाएं।

प्राचार्य
डॉ विवेक कुमार सैनी

संपादकीय

नव वर्ष: नई दिशा और नई ऊर्जा

जीवन की दौड़ में हम अक्सर बीते हुए कल के बोझ से दबे रहते हैं। पुरानी असफलताएँ, टूटे रिश्ते, या वो लक्ष्य जो पूरे नहीं हुए – ये सभी हमारे मन पर एक अदृश्य पीड़ा का भार लाद देते हैं। पर क्या यह पीड़ा हमारे भविष्य की राह को रोशन कर सकती है? शायद नहीं। जैसे पेड़ पुराने पत्तों को छोड़कर नई कोपलें फूटने देता है, वैसे ही हमें भी बीते समय के अप्रिय अनुभवों को पीछे छोड़कर आगे बढ़ना सीखना होगा।

हाँ, यह ज़रूर है कि हर अप्रिय घटना हमें कुछ सिखाती है। वह हमें अनुभव देती है, सचेत करती है, और हमारी समझ को गहरा बनाती है। पर इस सीख को सहारा बनाना और इसके नाम पर अपने वर्तमान को बोझिल बनाना – यह उचित नहीं। जीवन का असली रहस्य है – 'चलते रहना'। रुकना नहीं, ठहरना नहीं, बल्कि हर नए दिन को नए जोश के साथ जीना।

नव वर्ष का आगमन हमें यही संदेश देता है। यह कोई महज कैलेंडर का पन्ना पलटने का दिन नहीं, बल्कि अपने अंदर के 'पुराने पन्नों' को पलटने का अवसर है। यह समय है खुद को हल्का करने का, नई उमंग के साथ नए लक्ष्य तय करने का, और उन राहों पर चलने का जो अब तक अनछुई रह गई थीं।

हमारे महाविद्यालय का यह वातावरण सीखने, बढ़ने और बदलने का स्थान है। आइए, इस नव वर्ष पर हम सब प्रतिज्ञा करें कि बीती हुई पीड़ा को सीख का आधार बनाकर ही रखेंगे, उसे बोझ नहीं। नए सपने देखेंगे, नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ेंगे, और न केवल अपना, बल्कि अपने आस-पास के जीवन को भी उज्ज्वल बनाएँगे।

नव वर्ष हम सभी के लिए नई आशाओं, नई उपलब्धियों और नए संकल्पों का साक्षी बने। आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ!

संपादक

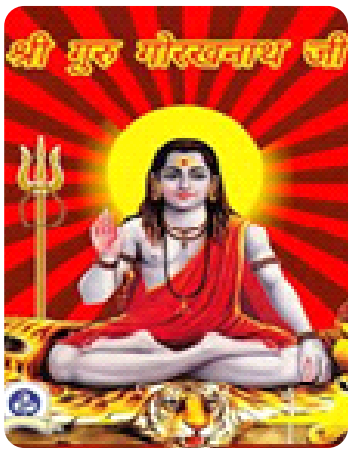

गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

गतांक से आगे....

परिशिष्ट-१ डॉ० बड़थ्वाल द्वारा सम्पादित गोरखबानी के परिशिष्ट-१ की रचनाओं में 'गोरख गणेश गुष्टि' में गणेश और गोरखनाथ का संवाद है जिसमें गणेश पूछते हैं और गोरख पंचत्तत्त्व, पच्चीस प्रकीति, पृथ्वी, अप, तेज आदि की व्याख्या करते हैं।"
'गोरख दत्त गुष्टि' (ज्ञान दीप बोध) में गोरख और दत्तात्रेय का परस्पर संबाद है, इस रचना में गोरख शिष्य और दत्तात्रेय स्वामी हैं। इसमें आवागमन, माता, पिता, गुरू उपदेश, भासन, विश्राम, ब्रह्मकपाट आदि की व्याख्या गुरू दत्तात्रेय के मुख से होती है। 'महादेव गोरख गुष्टि' में अन्य ग्रन्थों का तथ्य है। सूत्र अधिक हैं। किसकी उत्पत्ति किससे हुई यही बताया गया है। गोरख प्रश्न नहीं करते केवल महादेव से उपदेश ही सुनते हैं। इस का मुख्य विवेच्य विषय जीब और शिव का एकाकार तथा परब्रह्म में लय है ।" 'सिद्ध पुराण' में तुलना देकर बताया गया है कि कौन किस से बढ़ कर है।" 'दया बोध' में योगारम्भ से पूर्व अन्तर में दया उपजाने का उपदेश है। हिंसा त्याग, अविनासी में रमने, अगम-अगोचर के पास जाने आदि का विवेचन है। अन्त में संकलित कुछ पदों में सिद्ध-पंथ की ओर इंगित किया गया है और बताया गया है कि यह सहज मार्ग नहीं है।"

परिशिष्ट-२ गोरखबानी के परिशिष्ट-२ की रचनाओं में 'सप्तवार नवग्रह' में योगी के लिए सातों वारों और नौ ग्रहों को जीतना आवश्यक बताया गया है क्योंकि- 'सप्तवार नव ग्रह देवता काया भींतरि श्री गोरष कहे।'" 'व्रत' में बाहरी व्रत की नहीं वरन् आन्तरिक व्रत की अधिक आवश्यकता बताई गई है। " 'पंच अग्नि' में शरीर की पाँच अग्नियों और उनका शरीर में क्या-क्या कार्य है बताया गया । 'अष्टमुद्रा' में मूलनी, जलश्री, षीरनी, बेचरी, भूचरी, चाचरी, अगोचरी और उन्मनी नामक आठ मुद्राओं की व्याख्या है।"" 'चौबीस सिद्धी' में चौबीस सिद्धियाँ और उनके गुण बताये गए हैं, किन्तु अन्त में इन्हें ब्रह्मज्ञानी के मार्ग का कांटा बताया गया है तथा इन्हें त्याज्य बताया गया है।" 'बतीस लछन' में बतीस लक्षणों का वर्णन है । 'अष्टचक्र' में आधार, द्विष्ट, मणिपुर, अनहद, विसुध, अगनि, गिनानं तथ। सुछिम नामक आठ चक्रों का वर्णन है तथा 'रह रासि' अर्थात् रहस्य विचार में गोरखनाथ तक पहुँचने का मार्ग बताया गया है।

परिशिष्ट-३ की रचनाओं में २७ फुटकर पद संकलित हैं जिनका विषय नाम स्मरण, ब्रह्म ज्ञान, गुरू महिमा, साधना पद्धत्ति आदि का वर्णन है । इनमें से कुछ पद पहले की रचनाओं में भी आ चुके हैं। इन पदों को किसी निरंजनी साधु द्वारा रचित सुन्दर तिलक भी कहते हैं।"

१८-योगच्चूड़ामणि - यह एक सौ पिच्चासी पदों का एक संग्रह है जिसमें नाथ-सम्प्रदाय की योग विषयक मान्यताओं पर प्रकाश डाला गया है। इसकी कुछ सबदियाँ गोरखबानी की सबदियों के समान हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि डॉ० बड़थ्वाल द्वारा सम्पादित गोरखबानी की कई सबदियाँ योगचूड़ा-मणि में से ली गयी हैं। इसमें संसार की रहनि के विषय में गोरखनाथ ने कहा है -

गोरख कहै सुणोरे अवधू, जग में इसि विधि रहणां । आंख्यां देखवा कानां सुणिबां, मुखि करि कछुन कहणां ।।"
इस रचना में भावाभिव्यंजना अत्यन्त सुन्दर बन पाई है।

गोरखनाथ की रचनाओं के उपर्युक्त सामान्य परिचय से स्पष्ट है कि इन्होंने अपनी रचनायों में नाथ सम्प्रदाय की साधना पद्धत्ति और सिद्धान्तों की विस्तृत व्याख्या की है। इनके काव्य के कला-पक्ष पर इसी शोध प्रबन्ध के नौवें अध्याय में विस्तृत रूप से विचार किया गया है ।

गुरु गोरखनाथ के पद

आओ जोसी जोऔ नै बिचारी।
पहला पुरुष कै नारी जी ॥ टेक ॥
बाइ नहीं तहुंवां बादल नाहीं, बिन थांभां बाबै मंडप रचिया।
तिहां आप उपावनहारी जी ॥
बाप नहीं हो तौ तिह्यां बैठणड़े रे, माता बाल कुंवारी जी। पीव नैं पोढ्यौ मांझौ पालनैं, तिहां हूहीजै हिंडोलनहारी जी ॥ ब्रह्मा बिष्न नैं आदि महेस्वर, ये तीन्यूँ मैं जाया। इन तिहुँआँ नी मैं घर घरणीं, द्वैकर मेरी माया जी ॥ गंग जमुन मेरी षाटलड़ी रे, हंसा गवन तुलाई जी। धरणि पाथरणौं नै आभ पछेवड़ौ, तौ भी न सौड़ी माई जी ॥ षाटलड़ी मांझौ जनम बिगूतौ, चावल साँव न सारी जी। मछिंद्र प्रसादें गोरख बोल्या, ये तत जोओ बिचारी जी ॥

हे ज्योतिषी जी ! क्या आपने विचार किया कि इस जग में पहले पुरुष हुआ या नारी। तहाँ न वायु थी, न मेघ थे, बाबा (ब्रह्म) ने आधार के बिना भी संसार के मंडप की रचना कर दी। परन्तु इस उत्पत्ति में भी सूक्ष्म प्रकृति का योगदान रहा। इस माया का कोई जनक न होने से यह पहले ही विद्यमान थी। यह माया ऐसी है जो माँ भी है और बचपन से कुमारी भी है अर्थात् इसके स्थूल और सूक्ष्म दोनों रूप हैं। इसने अपने स्वामी पुरुष को पालने में लिटाया और हिंडोले में झुलाया अर्थात् इसने माँ के रूप में सशरीर आत्मा का पालन किया। माया कहती है कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर ये तीनों मैंने ही उत्पन्न किए। मैं इन तीनों के घर में गृहिणी भी हूँ। मेरा खेल दुहरा है। श्वास- प्रश्वास (गंग-जमुन) के बीच मेरी पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और मन (षाटलड़ी) सक्रिय हैं। प्राणों (हंस) का चलना ही मेरा बिछौना व है। मांस और अस्थियों (धरणी-पाथरणों) से शरीर (पछेवड़ौ) का रूप (आभ) बना है, फिर भी मेरी रचना शक्ति (सौड़ी) की नी सीमा न आ पाई। पाँच ज्ञानेन्द्रियों और मन (षाटलड़ी) के क्रिया-कलापों में ही सारा जीवन बीत गया, परन्तु चावल को नासँवारा सारा नहीं अर्थात् आत्म तत्त्व को शुद्ध स्वरूप नहीं किया। मच्छन्दर की कृपा से गोरख कहता है कि इस तत्त्व पर सोचो, विचार करो।

गोरख का मत सांख्य दर्शन के पुरुष-प्रकृति सिद्धान्त से मेल खाता है। पुरुष और प्रकृति दो तत्त्व हैं जिनसें सृष्टि का विकास होता है। पुरुष चेतन है, परन्तु प्रकृति अचेतन। प्रकृति का जन्म नहीं होता, वह स्थूल और सूक्ष्म रूपों में रहती है। इसमें संकोच और विस्तार होता है। चेतन भी अजन्मा है। दोनों के संयोग से सृष्टि उत्पन्न होती है और वियोग से सृष्टि का लोप हो जाता है। इसीलिए भोज राज ने योगदर्शन के भाष्य में लिखा है कि पुरुष और प्रकृति के वियोग की व्याख्या ही योग है।

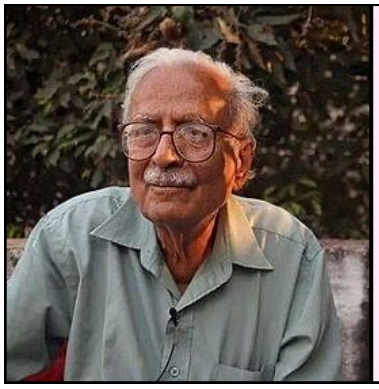

विनोद कुमार शुक्ल

एक परिचय

विनोद कुमार शुक्ल

विनोद कुमार शुक्ल (1 जनवरी 1937 – 23 दिसंबर 2025) एक हिंदी साहित्यकार थे जिन्हें हिंदी साहित्य में उनके अनूठे और सादगी भरे लेखन के लिए जाना जाता है। शुक्ल ने उपन्यास एवं कविता विधाओं में साहित्य सृजन किया है। उनका पहला कविता संग्रह 1971 में लगभग जय हिन्द नाम से प्रकाशित हुआ। 1979 में नौकर की कमीज़ नाम से उनका उपन्यास आया जिस पर फ़िल्मकार मणिकौल ने इसी से नाम से फिल्म भी बनाई। शुक्ल के दूसरे उपन्यास दीवार में एक खिड़की रहती थी को साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हो चुका है।
सन २०२४ में उन्हें भारतीय साहित्य के सर्वोच्च सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

शुरूआती जीवन
1 जनवरी 1937 को भारत के राज्य मध्यप्रदेश (अब छत्तीसगढ़) के राजनांदगांव में जन्मे शुक्ल ने प्राध्यापन को रोज़गार के रूप में चुनकर अपना पूरा ध्यान साहित्य सृजन में लगाया।

साहित्यिक जीवन
विनोद कुमार शुक्ल हिंदी कविता के वृहत्तर परिदृश्य में अपनी विशिष्ट भाषिक बनावट और संवेदनात्मक गहराई के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने समकालीन हिंदी कविता को अपने मौलिक कृतित्व से सम्पन्नतर बनाया है और इसके लिए वे पूरे भारतीय काव्य परिदृश्य में अलग से पहचाने जाते हैं।
उनकी एकदम भिन्न साहित्यिक शैली ने परिपाटी को तोड़ते हुए ताज़ा झोकें की तरह पाठकों को प्रभावित किया, जिसको 'जादुई-यथार्थ' के आसपास की शैली के रूप में महसूस किया जा सकता है। वे कवि होने के साथ-साथ शीर्षस्थ कथाकार भी हैं। उनके उपन्यासों ने भी हिंदी में एक मौलिक भारतीय उपन्यास की संभावना को राह दी है। उन्होंने एक साथ लोकआख्यान और आधुनिक मनुष्य की अस्तित्वमूलक जटिल आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति को समाविष्ट कर एक नये कथा-ढांचे का आविष्कार किया है।

अपने उपन्यासों के माध्यम से उन्होंने हमारे दैनंदिन जीवन की कथा-समृद्धि को अद्भुत कौशल के साथ उभारा है। मध्यवर्गीय जीवन की बहुविध बारीकियों को समाये उनके विलक्षण चरित्रों का भारतीय कथा-सृष्टि में समृद्धिकारी योगदान है। वे अपनी पीढ़ी के ऐसे अकेले लेखक हैं, जिनके लेखन ने एक नयी तरह की आलोचना दृष्टि को आविष्कृत करने की प्रेरणा दी है। आज वे सर्वाधिक चर्चित लेखक हैं। अपनी विशिष्ट भाषिक बनावट, संवेदनात्मक गहराई, उत्कृष्ट सृजनशीलता से श्री शुक्ल ने भारतीय वैश्विक साहित्य को अद्वितीय रूप से समृद्ध किया है।

प्रमुख कृतियां
कविता संग्रह
- 'लगभग जयहिंद ' वर्ष 1971
- वह आदमी चला गया नया गरम कोट पहिनकर विचार की तरह' वर्ष 1981.
- सब कुछ होना बचा रहेगा ' वर्ष 1992.
- अतिरिक्त नहीं ' वर्ष 2000.
- कविता से लंबी कविता ' वर्ष 2001.
- आकाश धरती को खटखटाता है ' वर्ष 2006.
- पचास कविताएँ' वर्ष 2011
- कभी के बाद अभी ' वर्ष 2012.
- कवि ने कहा ' -चुनी हुई कविताएँ वर्ष 2012.
- प्रतिनिधि कविताएँ ' वर्ष 2013.

उपन्यास
- ' नौकर की कमीज़ ' वर्ष 1979.
- ' खिलेगा तो देखेंगे ' वर्ष 1996.
- ' दीवार में एक खिड़की रहती थी ' वर्ष 1997.
- ' यासि रासा त ' वर्ष 2016
- ' एक चुप्पी जगह' वर्ष 2018.

कहानी संग्रह

- पेड़ पर कमरा ' वर्ष 1988.
- महाविद्यालय ' वर्ष 1996.
- एक कहानी ' वर्ष 2021.
- घोड़ा और अन्य कहानियाँ ' वर्ष 2021.

कहानी/कविता पर पुस्तक

- 'गोदाम', वर्ष 2020.
- 'गमले में जंगल', वर्ष 2021.

सम्मान एवं पुरस्कार

गजानन माधव मुक्तिबोध फेलोशिप ' (म.प्र. शासन)
रज़ा पुरस्कार ' (मध्यप्रदेश कला परिषद)
शिखर सम्मान ' (म.प्र. शासन)
राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान ' (म.प्र. शासन)
दयावती मोदी कवि शेखर सम्मान' (मोदी फाउंडेशन)
साहित्य अकादमी पुरस्कार', (भारत सरकार)
हिन्दी गौरव सम्मान' (उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, उ.प्र. शासन)
मातृभूमि' पुरस्कार, वर्ष 2020 (अंग्रेजी कहानी संग्रह 'Blue Is Like Blue' के लिए)
साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के सर्वोच्च सम्मान "महत्तर सदस्य" चुने गये, वर्ष 2021.
2024 का 59वां ज्ञानपीठ पुरस्कार समग्र साहित्य पर दिया गया।

'देश के नेताओं का चरित्र देख लीजिए, दुश्मनों के घर में अपने मित्र देख लीजिए'

नभ-छोर न्यूज ⏭ 26 जनवरी

हिसार। गांधी अध्ययन केंद्र द्वारा गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में काव्य संध्या का आयोजन किया गया जिसमें वरिष्ठ और नव हस्ताक्षरों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। कार्यक्रम की अध्यक्षता शिक्षाविद् और इतिहासकार डॉ. महेंद्र सिंह विवेक की और मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. राजपाल सिंह उपस्थित रहे। वीरेन्द्र कौशल ने सुनाया, 'देश के नेताओं का चरित्र देख लीजिए, दुश्मनों के घर में अपने मित्र देख लीजिए, तुम काहे लड़ते हो आपस में सारा दिन, अपने बनाए खुद रंगीन चित्र देख लीजिए।' शुभकरण गौड़ के भाव कुछ यूं रहे, 'ज्यादतियां सभी की दिल में छुपाए हुए हूं, मुस्करा कर मिलना माफी न समझें, आदत है मेरी।' सुरेश भारती 'नादान' ने अपनी उपस्थिति यूं दर्ज करवाई, 'काफिले कदम कदम बढाए चल रहे, यही देखकर बस दुश्मनों के दिल जल रहे।' कवि डॉ. मनोज भारत के भाव कुछ यूं रहे, 'आजादी का स्वप्न लें मन में भरा जुनून, दौड़ पड़े नर नारियां, ले बलिदानी खून।' खुशबू जैन ने देशभक्ति की कविता में नेताओं के गिरते स्तर पर स्टीक टिप्पणी करते हुए कहा, 'नेताओं का खेल निराला होता है, पूछो मत कितना घोटाला होता है।' राजेश 'भारती' ने अपनी गजल से समां बांध दिया, 'नफरतों का दौर ये प्यार की पिछली सदी रही, मैं सच बोलता रहा मुझमें यही आदत बुरी रही।' ओम प्रकाश शर्मा दिलबर 'निर्मल' के उद्गार, 'बगल में खंजर न देख ले कोई, हाथ में 'निर्मल' गुलाब रख लेना।' जय भगवान यादव की प्रस्तुति, 'भारत की आन है तिरंगा, शहीदों का सम्मान है तिरंगा, महाराणा का अभिमान है तिरंगा, सुभाष का स्वाभिमान है तिरंगा।' कवि पृथ्वी सिंह बेनीवाल बिश्नोई ने सुनाया, '26 जनवरी खुशियां दर्शाती, भारतीय एकता ये समझाती।' सुरेश कलाकार ने सुनाया, 'यूं कब तक धर्म सनातन का विनाश देखेंगे हम, यूं कब तक बब्बर शेरों को निराश देखेंगे हम, ऐ संसद खोलो शेरों को खा जाएं भेड़ियों को, यूं कब तक तिरंगे में लिपटी लाश देखेंगे हम।' इस काव्य संध्या में युवा कवि अशोक नंदा दुर्जनपुर से, राजेश सरल भिवानी से, नवोदित कवि विमल जांगड़ा ने भी अपनी सुंदर रचनाएं पढ़ी।

ENGISH PHRASES WORDS

1. "Break the ice"
Start a conversation in a comfortable way
माहौल को सहज बनाना / बातचीत शुरू करना

2. "Hit the nail on the head"
Say exactly the right thing
बिलकुल सही बात कहना

3. "Once in a blue moon"
Something that happens very rarely
बहुत कम होने वाली बात

4. "Piece of cake"
Very easy to do
बहुत आसान काम

5. "Under the weather"
Feeling slightly sick
थोड़ा बीमार महसूस करना

6. "Cost an arm and a leg"
Very expensive
बहुत महंगा होना

7. "In the long run"
Over a long period of time
लंबे समय में

8. "A blessing in disguise"
Something that looks bad but turns out good
जो बुरा लगे लेकिन अच्छा साबित हो

9. "On cloud nine"
Extremely happy
बहुत खुश होना

10. "Think outside the box"
Be creative and look for new ideas
नए और अलग तरीके से सोचना

साहित्य – मंथन

विश्व हिंदी दिवस : स्वभाषा से संस्कृति का संरक्षण : डॉ राजपाल

-पाठकपक्ष न्यूज-

हिसार, 12 जनवरी : विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर भाषा और संस्कृति के अटूट रिश्ते पर चिंतन करना समय की महत्वपूर्ण माँग है। डॉ. राजपाल का यह कथन कि 'किसी भी समाज, संस्कृति और धर्म को बचाने के लिए स्वभाषा बहुत जरूरी है,' एक सारगर्भित सत्य को उजागर करता है। भाषा केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि हमारी सामूहिक चेतना, इतिहास और अस्मिता का सजीव दस्तावेज है। यही कारण है कि स्वभाषा को बढ़ावा देना केवल भाषाई विविधता का प्रश्न नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक संरचना को मजबूत करने का प्रश्न है।आज के वैश्वीकरण के युग में, जहाँ विदेशी भाषाओं का प्रभुत्व बढ़ रहा है, स्वदेशी भाषाओं और उत्पादों को प्राथमिकता देने की आवश्यकता और भी अधिक हो गई है। जैसे स्वदेशी उत्पाद अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करते हैं, वैसे ही स्वभाषा हमारी सांस्कृतिक जड़ों को पोषित करती है। घर में मातृभाषा का प्रयोग बच्चों को उनकी विरासत से स्वाभाविक रूप से जोड़ता है। यह जुड़ाव केवल भाषा तक सीमित नहीं रहता; बल्कि इसके माध्यम से बच्चे अपने इतिहास, रीति-रिवाजों, नैतिक मूल्यों और सामाजिक दायित्वों से परिचित होते हैं। भाषा एक सूत्र है, जो पीढ़ियों को एक साथ बाँधती है और सामूहिक स्मृति को जीवित रखती है। व्यावहारिक आवश्यकताओं के लिए हम किसी भी भाषा को सीखें, परंतु घर का वातावरण मातृभाषा के लिए सुरक्षित अभयारण्य बना रहे। इस द्विभाषी दृष्टिकोण में संतुलन निहित है - एक ओर हम वैश्विक चुनौतियों के लिए स्वयं को सक्षम बनाते हैं, तो दूसरी ओर अपनी सांस्कृतिक नींव को मजबूत रखते हैं। जब हम बच्चों से हिंदी या स्थानीय भाषा में बात करते हैं, तो हम उन्हें केवल शब्द नहीं, बल्कि उन शब्दों में समाहित अनुभव, भाव और ज्ञान की परंपरा भी सौंपते हैं। समाज, धर्म और संस्कृति का सच्चा संरक्षण तभी संभव है जब भाषा सक्रिय रूप से जीवंत बनी रहे। भाषा के माध्यम से ही लोकगीत, कथाएँ, पर्व और अनुष्ठान अगली पीढ़ी तक पहुंचते हैं। अतः स्वभाषा का प्रचार-प्रसार केवल एक दायित्व नहीं, बल्कि हमारे अस्तित्व का प्रश्न बन गया है। आइए, इस विश्व हिंदी दिवस पर हम संकल्प लें कि अपनी दैनिक जीवनचर्या में मातृभाषा को गरिमामय स्थान देंगे, स्थानीय उत्पादों को प्रोत्साहन देंगे और भावी पीढ़ी को एक ऐसी विरासत सौंपेंगे, जहाँ उनकी पहचान और प्रगति दोनों सुरक्षित हों। क्योंकि, जिस समाज की भाषा मर जाती है, उसकी संस्कृति भी धीरे-धीरे इतिहास के पन्नों में समा जाती है।

प्रबुद्धजन संगोष्ठी में 72 शिक्षक सम्मानित

संगोष्ठी में शिक्षकों को सम्मानित करते आयोजक। स्रोत : आयोजक

हिसार। भारतीय शिक्षण मंडल एवं स्वदेशी जागरण मंच की ओर से समृद्ध भारत-महान भारत के नारे के साथ प्रबुद्धजन संगोष्ठी एवं प्राध्यापक सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इसमें 250 से अधिक शिक्षकों ने भाग लिया। इनमें से 72 शिक्षक सम्मानित किए गए। समारोह में दीपक शर्मा मुख्य वक्ता रहे। विशिष्ट अतिथि गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय के वीसी प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने सामाजिक बदलाव में शिक्षक का महत्व बताया। लाला लाजपतराय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विनोद कुमार वर्मा और चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा के कुलगुरु प्रोफेसर विजय कुमार ने हर शिक्षक को राष्ट्र निर्माता बताया। इस मौके पर डॉ. मोनिका सैनी, अनिल गोयल, दीपक कुमार शर्मा, प्रधान हजुटा डॉ. अशोक कुमार, डॉ. राजपाल आदि मौजूद रहे। ब्यूरो

गांधी अध्ययन केंद्र, मंडी रोड हिसार में काव्य गोष्ठी का आयोजन

-पाठकपक्ष न्यूज-

हिसार, 28 जनवरी : गांधी अध्ययन केंद्र, मंडी रोड हिसार में गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर काव्य गोष्ठी की परंपरा को निभाते हुए एक भव्य काव्य संध्या का आयोजन किया गया। इस साहित्यिक आयोजन में वरिष्ठ एवं नवोदित कवियों ने देशभक्ति, सामाजिक सरोकार और समसामयिक विषयों पर अपनी रचनाओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता शिक्षाविद एवं इतिहासकार डॉ. महेंद्र सिंह विवेक ने की, जबकि डॉ. राजपाल सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

काव्य संध्या में कलमकार वीरेंद्र कौशल ने अपने चर्चित अंदाज में व्यंग्यात्मक रचना प्रस्तुत की–

'देश के नेताओं का चरित्र देख लीजिए,
दुश्मनों के घर में अपने मित्र देख लीजिए...'

बहुमुखी प्रतिभा के धनी शुभकरण गौड़ ने भावपूर्ण पंक्तियों से श्रोताओं को प्रभावित किया–

'ज्यादतियां सभी की दिल में छुपाए हुए हूं,
मुस्करा कर मिलना माफी न समझें, आदत है मेरी।'

दुर्जनपुर से पधारे वरिष्ठ गीतकार सुरेश भारती 'नादान' ने ओजपूर्ण प्रस्तुति दी–

'काफिले कदम-कदम बढ़ाए चल रहे,
यही देखकर दुश्मनों के दिल जल रहे।'

भिवानी से आए चर्चित कवि डॉ. मनोज भारत ने देशभक्ति से ओत-प्रोत रचना सुनाई–

'आजादी का स्वप्न लें मन में भरा जुनून,
दौड़ पड़े नर-नारियाँ, ले बलिदानी खून।'

खुशबू जैन ने नेताओं के गिरते स्तर पर सटीक टिप्पणी करते हुए कहा–

'नेताओं का खेल निराला होता है,
पूछे मत कितना घोटाला होता है।'

कैथल से पधारे कवि राजेश 'भारती' ने अपनी गज़ल से खूब तालियां बटोरी–

'नफरतों का दौर ये, प्यार की पिछली सदी रही,
मैं सच बोलता रहा, मुझमें यही आदत बुरी रही।'

ओम प्रकाश शर्मा दिलबर 'निर्मल' ने शांति और सौहार्द का संदेश दिया–

'बगल में खंजर न देख ले कोई,
हाथ में 'निर्मल' गुलाब रख लेना।'

जय भगवान यादव ने तिरंगे की महिमा का गुणगान किया, वहीं पृथ्वी सिंह बेनीवाल बिश्नोई ने 26 जनवरी के महत्व को रेखांकित किया।

भिवानी से आए सुरेश कलाकार ने जोशीली पंक्तियों से वातावरण को गंभीर और भावुक बना दिया–

'यूँ कब तक तिरंगे में लिपटी लाश देखेंगे हम..'

इस काव्य संध्या में युवा कवि अशोक नंदा (दुर्जनपुर), राजेश सरल (भिवानी) एवं नवोदित कवि विमल जांगड़ा ने भी अपनी रचनाएं प्रस्तुत कीं। कार्यक्रम में राजेश जाखड़, धनराज, सुदर्शन गुप्ता सहित नगर के अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

हिंदी हमारी सामूहिक चेतना की वाहक

सर्वोदय भवन में आयोजित कवि सम्मेलन में भाग लेते प्रतिभागी। स्रोत: आयोजक

हिसार। गणतंत्र दिवस के मौके पर राष्ट्रीय हिंदी साहित्यिक संस्था 'शब्दाक्षर' ने सर्वोदय भवन में कवि सम्मेलन का आयोजन किया। मुख्य अतिथि डॉ. राजपाल ने हिंदी को हमारी सामूहिक चेतना की वाहक बताया।

कार्यक्रम में कैथल से आए कवि राजेश ''भारती'' ने अपनी कविता में कहा कि नफरतों का दौर है ये, प्यार की पिछली सदी थी, जबकि भिवानी से आए कवि डॉ. मनोज भारत ने आजादी के लिए बलिदान की बात की।

हिसार के कवि विरेंद्र कौशल ने नेताओं के चरित्र पर व्यंग्य किया। कवयित्री खुशबू जैन, सुरेश भारती, अशोक नंदा, राजेश सरल और विमल जांगड़ा ने अपनी कविताएं प्रस्तुत की। कार्यक्रम ने साहित्य प्रेमियों के बीच एक नई ऊर्जा का संचार किया। संवाद

ये साहित्यकार हिंदी साहित्य के विभिन्न युगों (छायावाद, आधुनिक) से संबंधित हैं और उन्होंने अपनी रचनाओं से हिंदी भाषा को समृद्ध किया है।

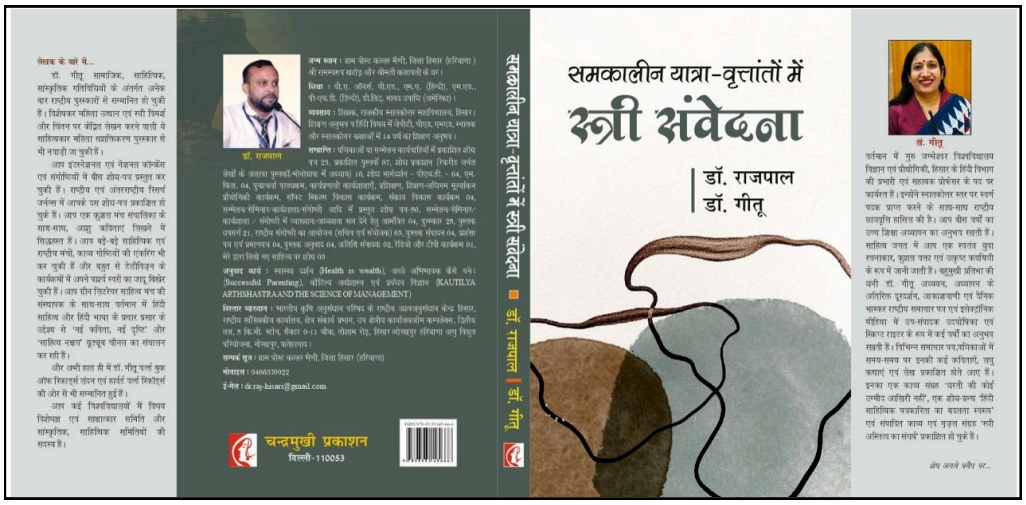

प्रियंका

1. हिन्दी की सबसे अधिक बोली जाने वाली बोली है? - भोजपुरी
2. हिन्दी की उपभाषाएँ हैं? -५ राजस्थानी हिन्दी, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, बिहारी हिन्दी, पहाड़ी हिन्दी
3. खड़ी बोली के अन्य नाम हैं? - हिन्दुस्तानी, नागरी, सरहिन्दी, कौरवी
4. अंगिका और वज्जिका हिन्दी की किस उपभाषा की गौण बोलियाँ हैं? - बिहारी हिन्दी
5. हिन्दी की ओकारबहुला बोलियाँ हैं? - ब्रजभाषा, बुंदेली, कन्नौजी, जयपुरी, मेवाती, मालवी, बुंदेली, कुमाउनी
6. हिन्दी की आकार बहुला बोलियाँ हैं? कौरवी, हरियाणवी, दक्खिनी
7. हिन्दी की उदासीन अकारबहुला बोलियाँ हैं? - छत्तीसगढ़ी, बघेली, मगही, मैथिली।
8. हिन्दी की उपभाषाएँ एवं बोलियाँ
9. उपभाषा

(१) राजस्थानी- मारवाड़ी, जयपुरी या ढुंढाड़ी, मेवाती, मालवी
(२) पश्चिमी हिन्दी- कौरवी, हरियाणवी या बांगरू, दक्खिनी, ब्रजभाषा, बुंदेली, कन्नौजी
(३) पूर्वी हिन्दी- अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी
(४) बिहारी हिन्दी- भोजपुरी, मगही, मैथिली
(५) पहाड़ी हिन्दी- गढ़वाली, कुमाउनी

10. हिन्दी को भारत की राजभाषा कब बनाया गया ? - १४ सितम्बर १९४९
11. जब संविधान बना था उस समय आठवीं अनुसूची में कुल कितनी भाषाएँ थीं? -१४
12. संख्या की दृष्टि से संविधान का सर्वप्रथम उपबंध कौन सा है जिसमें राजभाषा के संदर्भ में निर्देश है? - अनुच्छेद १२०
13. हिन्दी की व्यंजनांत बोली है? - भोजपुरी, अवधी

किरण रानोलिया

शब्द-युग्म
(समान-सा उच्चारण किंतु भिन्न अर्थवाले शब्द)

प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जो उच्चारण एवं लेखन में काफी समानता लिए हुए होते हैं किंतु थोड़ी-सी भिन्नता से भी उनके अर्थ नितांत अलग-अलग होते हैं। इस प्रकार के शब्दों के उच्चारण एवं लेखन की समानता-असमानता और अर्थ-भिन्नता के प्रति विशेष जागरूकता नहीं दिखाई जाए तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। इसलिए भाषा की शुद्धता की दृष्टि से इस प्रकार के शब्दों की विशेष जानकारी आवश्यक है। शब्द का अर्थ मूलतः उसके प्रयोग में निहित रहता है, अतः परीक्षा में भी शब्द के अर्थ को वाक्य में प्रयोग भगों करके स्पष्ट करना चाहिए।

शब्द	अर्थ
कुल	वंश
कूल	किनारा
कृत	किया हुआ
कृत्य	कार्य
क्रीत	खरीदा हुआ
कृति	रचना
कृती	चतुर, करनेवाला
कटक	सेना
कंटक	काँटा

विलोम शब्द (Antonyms)

भाषा जीवन की अभिव्यक्ति है और जीवन द्वंद्वात्मक, अन्तर्विरोधात्मक है, इसलिए प्रत्येक भाषा में दो विपरीत अर्थों, मंतव्यों को व्यक्त करने के लिए अलग-अलग शब्दों का अस्तित्व रहता है। विपरीत भाव को व्यक्त करने के लिए ही विलोम (उल्टा) शब्दों की जानकारी आवश्यक है। हिंदी में ऐसे विलोम शब्द या तो मूल शब्द के रूप में पहले से ही विद्यमान हैं; जैसे दिन-रात, सुख-दुःख, छोटा-बड़ा आदि या फिर उपसर्ग लगाकर; जैसे-ज्ञानी-अज्ञानी, अर्थ-अनर्थ या उपसर्ग बदलकर; जैसे-सक्षम-अक्षम, अनुकूल-प्रतिकूल बनाए जाते हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण विलोम शब्दों की सूची इस प्रकार है-

शब्द	अर्थ
अग्र	पश्च
अलभ्य	लभ्य/प्राप्य
अल्प	अति, महा, बहु
अस्त	उदय
अनुरूप	प्रतिरूप
अनेक	एक
अंधकार	प्रकाश
अनुलोम	प्रतिलोम/विलोम
अक्षम	सक्षम
अगम	सुगम
अनाहूत	आहूत
अपेक्षा	उपेक्षा
अधम	उत्तम
अपकार	उपकार

प्रशासनिक शब्दावली

राजकीय प्रशासन एवं अन्यत्र भी हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं का चलन है इसलिए अंग्रेज़ी एवं हिंदी दोनों भाषाओं की आधारभूत पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है। यहाँ भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित विविध शब्दावलियों से मुख्य मुख्य शब्दावली दी जा रही है। यह शब्दावली ही अधिकृत है, अतः शब्दों के इसी हिंदी अनुवाद को प्रयोग में लेना चाहिए।

Merger = विलयन

Metalled road = पक्की सड़क

Migration = प्रवास

Ministerial = मंत्रालयिक/लिपिक वर्गीय

Minutes = कार्यवृत्त

Misappropriation = दुर्विनियोग

Miscellaneous = फुटकर/विविध

Misconduct = दुराचरण

Misleading = भ्रामक

Misrepresentation = अन्यथा कथन

Modus operandi = कार्य प्रणाली

Mortgage = बंधक/गिरवी

Motion = प्रस्ताव (RAS-98)

Motive = प्रयोजन/प्रेरणा/प्रेरक

Mutation = नामांतरण

National anthem = राष्ट्रगान

National Convention = राष्ट्रीय सम्मेलन

National Song = राष्ट्रगीत

Negligible = नगण्य

Negotiate = बातचीत करना

Nepotism = भाई भतीजावाद

Net amount = अवशिष्ट राशि

Net Total = शुद्ध जोड़

No Demand Certificate = बेबाकी प्रमाण-पत्र

No Objection Certificate = अनापत्ति प्रमाण-पत्र

Non-consumable = अनुपभोज्य

Non-observance = अपालन

Non-qualifying Service = अनर्हकारी सेवा

Not due = देयातिरिक्त

Note of protest = प्रतिवाद-पत्र

विश्व हिंदी दिवस पर विशेष

विश्व हिंदी दिवस (10 जनवरी) की अवधारणा और उद्देश्य निस्संदेह महत्वाकांक्षी एवं प्रशंसनीय हैं। यह हिंदी को एक वैश्विक मंच प्रदान करने का सार्थक प्रयास है। हालाँकि, इसकी प्रासंगिकता, प्रभावशीलता और अंतर्निहित विरोधाभासों पर एक गहन आलोचनात्मक दृष्टि आवश्यक है।

1. प्रतीकात्मकता बनाम ठोस नीतिगत कार्यान्वयन: यह दिवस अक्सर प्रतीकात्मक आयोजनों तक सीमित रह जाता है। विदेशों में भारतीय दूतावासों द्वारा कार्यक्रम आयोजित करना सांस्कृतिक कूटनीति का एक दृश्यमान पक्ष है, परंतु क्या इसके पीछे हिंदी को अंतरराष्ट्रीय संचार, व्यापार, विज्ञान और कूटनीति की व्यावहारिक भाषा बनाने की कोई ठोस रणनीति है? क्या संयुक्त राष्ट्र जैसे संगठनों में हिंदी को आधिकारिक भाषा का दर्जा दिलाने की दिशा में इस दिवस के माध्यम से कोई ठोस राजनयिक पहल देखने को मिलती है? अक्सर ऐसा प्रतीत होता है कि उद्देश्य और साधन के बीच एक खाई है।

2. 'वैश्विक हिंदी' की परिभाषा और सीमाएँ: फिजी, मॉरीशस आदि देशों में हिंदी की उपस्थिति औपनिवेशिक इतिहास की देन है। यह वैश्वीकरण का एक विशिष्ट, ऐतिहासिक मॉडल प्रस्तुत करती है। किंतु आज के वैश्विक संदर्भ में, क्या हिंदी का विस्तार नए भू-राजनैतिक क्षेत्रों में हो रहा है, या यह मुख्यतः प्रवासी भारतीयों तक ही सीमित है? क्या अफ्रीका, पूर्वी एशिया या यूरोप के गैर-भारतीय मूल के लोग हिंदी सीखने को प्रेरित हो रहे हैं? बॉलीवुड और OTT के प्रभाव से उपजी 'स्वीकार्यता' अक्सर निष्क्रिय उपभोग (मनोरंजन) तक सीमित है, सक्रिय अभिव्यक्ति (लेखन, बौद्धिक विमर्श) तक नहीं पहुँच पाती।

3. आंतरिक विविधता बनाम एकरूपता का संकट: विश्व हिंदी दिवस 'हिंदी' को एक सजातीय इकाई के रूप में प्रस्तुत करता प्रतीत होता है। परन्तु भारत के भीतर ही हिंदी क्षेत्र की बोलियों और विविध सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों (भोजपुरी, मैथिली, अवधी आदि) के साथ इसके जटिल संबंध हैं। क्या वैश्विक पटल पर 'मानक हिंदी' को प्रोत्साहित करने की प्रक्रिया में ये स्थानीय स्वरूप हाशिए पर चले जाएँगे? यह केंद्र बनाम परिधि का महत्वपूर्ण प्रश्न उत्पन्न करता है।

4. डिजिटल दुनिया में चुनौतियाँ: हिंदी की डिजिटल उपस्थिति निर्विवाद है, परंतु यह गुणवत्ता और पहुँच के मामले में अंग्रेजी से काफी पीछे है। तकनीकी क्षेत्र में, विशेष रूप से AI और कम्प्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स के स्तर पर, हिंदी अभी भी एक 'उभरती हुई' डिजिटल भाषा है। अधिकांश प्रतिष्ठित अकादमिक ज्ञान का भंडार अभी भी अंग्रेजी में है। विश्व हिंदी दिवस इस डिजिटल विभाजन को पाटने के लिए कितनी ठोस पहल कर पाता है?

5. राष्ट्रीय हिंदी दिवस से भेद: एक आलोचनात्मक दृष्टि: 14 सितंबर और 10 जनवरी के बीच का भेद सैद्धांतिक रूप से स्पष्ट है, पर व्यवहार में धुंधला हो जाता है। क्या भारत सरकार की नीतियाँ हिंदी के राष्ट्रीय प्रसार (जिसमें गैर-हिंदी भाषी राज्यों में अक्सर विवाद होता है) और उसके वैश्विक प्रचार के बीच स्पष्ट तालमेल बिठा पाई हैं? कई बार आंतरिक राजनीतिक एजेंडे वैश्विक प्रचार के उद्देश्यों पर भारी पड़ जाते हैं, जिससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का निरपेक्ष सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व प्रभावित होता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव: विश्व हिंदी दिवस एक आवश्यक और सराहनीय पहल है, किंतु इसे केवल रस्म अदायगी और उत्सवधर्मिता से आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। इसकी सार्थकता तभी सिद्ध होगी जब यह निम्नलिखित पर केंद्रित हो:

· हिंदी में वैश्विक स्तर का बौद्धिक व ज्ञान-विज्ञान का साहित्य तैयार करने व अनुवाद को प्रोत्साहन।

· अंतरराष्ट्रीय संस्थानों में हिंदी की व्यावहारिक उपयोगिता बढ़ाने हेतु जमीनी राजनयिक प्रयास।

· डिजिटल क्षेत्र में हिंदी के इंफ्रास्ट्रक्चर (सर्च इंजन, AI टूल्स, शैक्षिक प्लेटफॉर्म) का विकास।

· 'विश्व हिंदी' की परिकल्पना में भारतीय भाषाई परिवार की अन्य भाषाओं और हिंदी की बोलियों को भी सम्मिलित करने का लचीला दृष्टिकोण।

तभी यह दिवस वास्तव में हिंदी को एक सशक्त वैश्विक भाषा के रूप में स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त कर सकेगा, न कि केवल उसकी वैश्विक कल्पना का प्रतीक बनकर रह जाएगा।

मासूम

एक सहमा -सा बच्चा,
बाहर से मां के पास आया।
मां को बोला मां ! मां !
आज उसका पापा भी आ गया,
मेरे पापा कब आएंगे, बता ना ।
मां के पास हर रोज यही प्रश्न,
मगर उत्तर उसका बता न सकी।
खुद को ढांढस बंधा बोली बेटा!
जब आप बड़े हो जाओगे तब।
मां की बात सुन बच्चा बोला मां !
सोनू तो मेरी क्लास में है मां !
उसका पापा तो आ गए मां !
मां के पास अब सिर्फ आंसू थे,
फूलों से सजी तस्वीर को देखा,
बोली तंग मत कर, उससे पूछ ले।
बच्चा पापा की तस्वीर से बोला,
आ जाओ न पापा, कब आओगे।
सब के पापा आ गए, आ जाओ।
तस्वीर पे चढ़े फूल देख बोला,
देखो आपकी तस्वीर के फूल ।
बासी हो गए, जल्दी आ जाओ।
हम दोनों स्कूल से ताजा लाएंगे।
मां फोन भी नही मिलती आपको,
कहती है नेटवर्क नही आ रहा ,
पापा मैं फोन लेकर छत पे जाऊं।
उठा लेना, बस मिस कॉल मरूंगा
मां कहती है पैसे कम है फोन में।
मां बोले तो बोल देना आप मां को
मैने मिलाया था बेटे की याद में।
मां ये सब देख बस रो रही है,
जिसके चले गए वो कब आते है।

(डॉ. आर. पी. राज)

पुस्तक समीक्षा

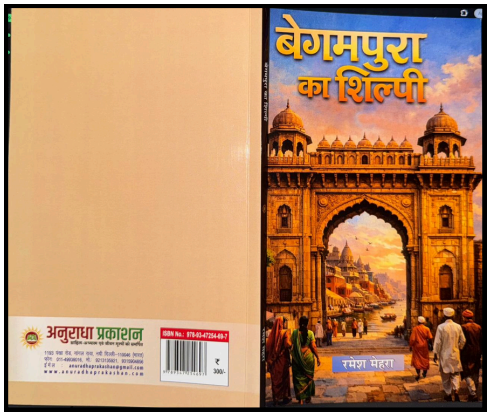

लेखक: रमेश मेहरा
पुस्तक: "बेगमपुरा का शिल्पी"
मूल्य: ₹300.00
पृष्ठ: 128
विधा- उपन्यास
अनुराधा प्रकाशन नई दिल्ली

प्रस्तुत उपन्यास 'बेगमपुरा का शिल्पी ' साहित्यिक, सामाजिक और ऐतिहासिक महत्व को स्पष्ट करता है। इसे एक वैकल्पिक दृष्टि से देखते हुए, यह उपन्यास न केवल एक ऐतिहासिक जीवनी है, बल्कि वर्तमान सामाजिक-राजनैतिक परिदृश्य में दलित चेतना के लिए एक सशक्त घोषणापत्र(मैनिफेस्टो)के रूप में भी प्रस्तुत होता है। डॉ. मेहरा यहाँ केवल लेखक नहीं, बल्कि एक वैचारिक मसीहा की भूमिका में नज़र आते हैं, जो इतिहास के पन्नों से एक क्रांतिकारी संत की हत्या की साज़िश को उजागर करके, आज के दलित समाज को उसकी राजनैतिक चेतना और सामूहिक स्मृति से जोड़ते नजर आते हैं। लेखक का वर्तमान परिदृश्य में 'मसीहा' के रूप में
गुरु रविदास की हत्या को 'ऑनर किलिंग' के रूप में प्रस्तुत करके, केवल अतीत की घटना नहीं बताई, बल्कि जाति आधारित हिंसा की सनातन पद्धति को रेखांकित किया है। यह दृष्टि उन्हें वर्तमान में हो रही दलित उत्पीड़न की घटनाओं को ऐतिहासिक निरंतरता में समझने का औज़ार देती है। वे एक सच्चे मसीहा की भाँति, समाज को उसके 'भुला दिए गए सच' से साक्षात्कार कराते हैं।

ब्राह्मणवादी व्यवस्था का विच्छेदन: जैसा कि उन्होंने ब्राह्मणवाद की 'बखिया उधेड़ी' है। यह कार्य केवल आलोचना नहीं, बल्कि एक सर्जिकल स्ट्राइक है। मनुवाद और पाखंडवाद का तार्किक विश्लेषण करके, वे दलित पाठक को मानसिक गुलामी से मुक्ति का रास्ता दिखाते हैं। यह बौद्धिक मुक्ति का कार्य एक मसीहा का ही हो सकता है। रविदास को 'क्रांतिकारी समाज सुधारक' के रूप में पुनर्स्थापना: परंपरागत बलि-भक्ति के नरम चित्रण के बजाय, रविदास को एक सामाजिक क्रांतिकारी के रूप में चित्रित करना एक सचेत राजनैतिक कदम है। यह दलित समाज को एक ऐसा नायक देता है जो अन्याय के प्रत्यक्ष विरोध का प्रतीक है। डॉ. मेहरा इस पुनर्पाठ के माध्यम से वर्तमान दलित युवाओं में चुनौती और परिवर्तन की भावना का संचार करते हैं सांस्कृतिक प्रतीकों का पुनराधिपत्य: मीराबाई जैसी राजपूत रानी द्वारा एक दलित संत की शिष्या बनना, जाति व्यवस्था के सबसे 'पवित्र' माने जाने वाले सांस्कृतिक प्रतीकों (राजपूताना शिष्टता) का विघटन है। इस घटना को केंद्र में रखकर लेखक यह संदेश देता है कि सच्ची आध्यात्मिकता और ज्ञान जाति की सीमाओं को तोड़ते हैं। वर्तमान में, जब जातीय गौरव का प्रश्न केंद्रीय है, यह प्रसंग नैतिक बल प्रदान करता है। 'बेगमपुरा' की समकालीन प्रासंगिकता: गुरु रविदास द्वारा प्रतिपादित 'बेगमपुरा' (ऐसा शहर जहाँ कोई दुख न हो) की अवधारणा इस उपन्यास के माध्यम से एक राजनैतिक यूटोपिया बन जाती है। यह दलित समाज के संघर्ष का केवल धार्मिक लक्ष्य नहीं, बल्कि एक सामाजिक न्याय पर आधारित समाज का रूपक बनकर उभरता है। डॉ. मेहरा इस रूपक को पुनर्जीवित करके वर्तमान दलित आंदोलन को एक दार्शनिक आधार प्रदान करते हैं। डॉ. रमेश मेहरा का यह उपन्यास निश्चित रूप से दलित साहित्य में एक मील का पत्थर है। यह केवल इतिहास या साहित्य नहीं, बल्कि एक विचारधारा का साहित्यिक अवतरण है ।लेखक दलितों के 'सच्चे मसीहा' के रूप में नजर पाते है। वे एक वैचारिक मार्गदर्शक हैं जो अतीत के शोषण के सच को उजागर करके, वर्तमान पीढ़ी को उसकी गरिमा और संघर्ष की विरासत से अवगत कराते हैं। यह उपन्यास दलित समाज को केवल शिकायत नहीं, बल्कि गर्व, पहचान और प्रतिरोध की भाषा देता है, जो किसी भी समाज के सच्चे हितैषी का सर्वोच्च कार्य होता है। हिंदी साहित्य जगत में हमेशा स्मरणीय रहेगा ।प्रत्येक विद्यार्थी,शोधार्थी ,शिक्षित सचेतन व्यक्ति -समाज , सुधीजन इससे लाभान्वित होगा । डॉ. रमेश मेहरा रचित 'बेगमपुरा का शिल्पी' : एक ऐतिहासिक-सामाजिक क्रांति की साहित्यिक अभिव्यक्ति है ।स्कूल स्तर से लेकर विश्वविद्यालय स्तर के पाठ्यक्रम में शामिल होने योग्य एक अनूठी अनिवार्य पठनीय कृति है।

समीक्षक
डॉ राजपाल
हिंदी-विभाग